P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

चम्पारण सत्याग्रह – डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और महात्मा गाँधी

प्रीति गिरि
शोध छात्रा इतिहास
अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

आभा रुपेन्द्र पाल
विभागाध्यक्ष,
इतिहास अध्ययनशाला,
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय,

सारांश

बिहार में चम्पारण जिले को यह सौभाग्य प्राप्त है कि दक्षिण अफ्रीका से वापस आकर महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह का प्रारंभ 1915 में यहीं से किया। चम्पारण किसान आंदोलन देश की आजादी के संघर्ष का मजबूत प्रतीक बन गया था। हजारों भूमिहीन मजदूर एवं गरीब किसान खाद्यान्न के बजाय नील और नकदी फसलों की खेती करने के लिए बाध्य हो गये थे। वहाँ पर नील की खेती करने वाले किसानों पर अंग्रेजों के द्वारा खूब शोषण हो रहा था। वहाँ जीरात और असामीवार तरीके से नील की खेती कराई जाती थी। निलहों की दखल में जो जमीन थी, इसमें वे अपने हल बैल की सहायता से नील की खेती करते थे। वह या तो मालिक की जीरात की जमीन होती थी या फिर काश्तकारी के हक प्राप्त होते थे। लेकिन निलहे जब चाहें रैयतों से मजदूरी करा लिया करते थे और बदले में उन्हें बहुत कम पैसे दिया करते थे। दूसरा तरीका था असामीवार, इसमें रैयतों द्वारा नील पैदा किया जाता था। इसके कई प्रकार थे लेकिन तीन कठिया प्रथा काफी प्रचलित थी। यह व्यावसायिक फसल थी लेकिन किसान इसे इसलिए नहीं करना चाहते थे क्योंकि इसका सारा मुनाफा निलहे उठा लिया करते थे।

गाँधीजी अप्रैल 1917 में राजकुमार शुक्ल के निमंत्रण पर बिहार के चम्पारण के नील कृषकों की स्थिति का जायजा लने वहाँ पहुँचे। उनके दर्शन के लिए हजारों लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। पुलिस सुपरिटेंडेंट ने गाँधीजी को जिला छोड़ने का आदेश दिया। गाँधी जी ने आदेश मानने से इंकार कर दिया। महात्मा गाँधी ने अपने प्रथम सत्याग्रह आंदोलन का सफल नेतृत्व किया। उनका उद्धेश्य लोगों को सत्याग्रह के मूल सिद्धांतो से परिचय कराना था। इसी आंदोलन के द्वारा देश को राजेन्द्र प्रसाद जैसे विभूति मिले जो स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति हुए।

मुख्य शब्द : तीन कठिया पद्धति, निलहे, सत्याग्रह, नगदी फसल।

प्रस्तावना

अंग्रेजो के विरुद्ध गाँधीजी के नेतृत्व में कई आंदोलन हमारे देश में हुए। इन्हीं आंदोलनों में से एक आंदोलन चम्पारण सत्याग्रह था। यह आंदोलन किसानों से जुड़ा हुआ था। इस आंदोलन के माध्यम से महात्मा गाँधी ने लोगो के विरोध को सत्याग्रह के माध्यम से लागू करने का पहला प्रयास किया, जो ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ आम जनता का अहिंसक प्रतिरोध था। महात्मा गाँधी ने अपने साथ कुछ क्षेत्रीय नेता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, ब्रज किशोर सिंह, डॉ. अनुग्रह नारायण, राजकुमार शुक्ल को आन्दोलनमे जोड़कर चंपारण के लोगों को संगठित किया तथा उन्हें शिक्षित, आत्मनिर्भर बनाकर और आजीविका के विभिन्न तरीकों को अपनाकर आर्थिक रुप से मजबूत बनना सिखाया। महात्मा गाँधी के प्रभाव से ही यह आंदोलन सफल हुआ। इस आंदोलन की पृष्ठभूमि अंग्रेजो के शोषण से किसानों को मुक्त करने की थी, जिसमें महात्मा गाँधी के साथ–साथ क्षेत्रीय नेताओं के नेतृत्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अध्ययन का उद्देश्य

भारत की आजादी के इतिहास में चम्पारण सत्याग्रह को मील का पत्थर माना जाता है। इसी आंदोलन की वजह से देशवासियों ने मोहनदास करमचंद गाँधी को 'महात्मा' के तौर पर पहचाना। गाँधीजी ने इसी आंदोलन से अहिंसा का एक कामयाब विचार लोगों के मन में बोया। 20वीं शताब्दी का यह एक व्यापक तथा संगठित किसान आंदोलन था, जिसके फलस्वरुप देश के दिग्गज नेता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राजनीति पटल पर आये, जो गाँधीजी के साथ पूरे चंपारण आंदोलन में एक सहयोगी के रुप में खड़े रहे। गाँधी जी का मानना था कि जब तक बिहार में व्यापक सुधार कार्य नहीं किया जायेगा, लोगों के मन में आत्म विश्वास नहीं आ पायेगा। साथ ही उन्होंने चंपारण में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, सामूहिक भोजन और छूआछूत के खिलाफ अभियान इसी आंदोलन के

दौरान व्यापक रुप से शुरु किया। आज के परिपेक्ष्य में देश को इन्हीं सब बातों की आवश्यकता है।

साहित्यावलोकन

वाल्मीकि चौधरी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सचित्र जीवनी, प्रकाशन विभाग, 1983

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवनी पर प्रकाश डाला है। लेखक ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को रंग रुप, वेश–भूषा, बोल चाल, आचार–विचार, दिल और दिमाग से भारतीय और भारत के प्रतीक माना है। गाँधीजी के निकट कई रत्न इकट्ठे हुए थे, उनमें वे ही देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद कहलाए। इस पुस्तक को लेखक ने 15 अध्याय में बाँटा है जिसमें डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवन परिचय से लेकर, राजनीतिक आंदोलन तथा राष्ट्रपति बनते तक विस्तृत उल्लेख किया है।

सुजाता, चम्पारण का सत्याग्रह, सर्वसेवा संघ वाराणसी, 2018

प्रस्तुत पुस्तक में लेखिका ने अत्यन्त सरल एवं सहज तरीके से सत्याग्रह की घटनाओं का वर्णन एवं निष्कर्षों को प्रस्तुत किया है। यह पुस्तक सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन में सत्याग्रह के महत्व को न केवल रेखांकित करती है बल्कि शासकों के भय एवं वर्चस्व को भी तोड़ती है। चम्पारण में गाँधीजी ने असहमति, अस्वीकार, असहयोग, विनम्र प्रतिकार एवं रचना का मेल कराकर सत्याग्रह का शास्त्र रच डाला।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, चम्पारण में महात्मा गाँधी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1998

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने उल्लेख किया है कि जिस समय यह पुस्तक लिखी गई थी, उस समय और आज में बहुत अंतर है और यदि आज यह पुस्तक लिखी जाती तो संभवतः इसका रुप कुछ दूसरा ही होता, पर मैंने यह समझा कि यदि वह जैसी लिखी गई थी, उसी प्रकार पाठकों की सेवा में उपस्थित की जाए तो आज के आंदोलन के बीजमंत्र को वह देख सकेंगे। इस पुस्तक में चम्पारण की घटना का ही अत्यंत विस्तृत और विराट उल्लेख किया गया है।

जयंत दिवाण, चम्पारण सत्याग्रह की कहानी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 2017

प्रस्तुत पुस्तक चम्पारण सत्याग्रह की कहानी में छोटे–छोटे अध्यायों के जरिये रोचक तरीके से वर्णन किया गया है। इस पुस्तक को लेखक ने 26 अध्याय में बाँटा है। जिसमें चम्पारण का इतिहास और भूगोल, कृत्रिम नील और शोषण का नया हथियार, निलहों में घबराहट, जाँच समिति की नियुक्ति, समाचार पत्रों की प्रतिक्रियाएँ इत्यादि छोटे–छोटे अध्याय में चम्पारण आंदोलन को समझाने की कोशिश की है।

अजीत प्रताप सिंह, चम्पारण सत्याग्रह का गणेश, लोकभारती प्रकाशन, 1 दिसम्बर 2018

यह पुस्तक चम्पारण सत्याग्रह में महात्मा गाँधी की भूमिका का रोचक अध्ययन है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में किसानों की समस्याएँ एक अभिन्न अंग बन गयी थी। वह संघर्ष जिसने मोहनदास करमचंद गाँधी को महात्मा गाँधी बना दिया। इस आंदोलन के सूत्रधार और उनके सहयोगियों की चर्चा के बिना संघर्षगाथा अधूरी है। यह पुस्तक दरअसल स्वाधीनता संग्राम की समझ की प्रतिसमझ के धरातल का विस्तार करती है।

ब्रज किशोर सिंह, नील संघर्ष और गाँधी, प्राच्य प्रकाशन, दिल्ली, 2009

प्रस्तुत पुस्तक को लेखक ने सोलह अध्याय में बाँटा है। यह पुस्तक महात्मा गाँधी के सत्याग्रह संबंधित पुस्तकों में विशिष्ट स्थान रखती है। इसमें नील आंदोलन से संबंधित समस्याओं और गूढ़ तत्वों का नये ढंग से मूल्यांकन किया गया है।

लाल बहादुर सिंह चौहान, देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, स्वास्तिक प्रकाशन, दिल्ली, 2004

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के जीवनी का वर्णन करते हुए उनके चम्पारण आंदोलन, भारतछोड़ो आंदोलन सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं असहयोग आंदोलन में नेतृत्व का विस्तृत वर्णन किया है। साथ ही देश के प्रति समर्पण की भावना और राष्ट्रनिर्माण में उनकी भूमिका के साथ राष्ट्रपति बनने तक का सफर का उल्लेख किया गया है।

महात्मा गाँधी सत्य के प्रयोग (आत्मकथा), नवजीवन प्रकाशन, 2012

सत्य के प्रयोग महात्मा गाँधी की आत्मकथा है। यह आत्मकथा उन्होंने मूल रुप से गुजराती में लिखी है। उन्होंने स्वाधीन भारत की कल्पना की और स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए कठिन संघर्ष किया। स्वाधीनता से उनका अर्थ केवल ब्रिटिश राज से मुक्ति ही नहीं था, बल्कि वे गरीबी, निरक्षरता और अस्पृश्यता जैसी बुराईयों से मुक्ति का सपना देखते थे। वे चाहते थे कि सारे देश के सारे नागरिक समान रुप से आजादी और समृद्धि का सुख पा सकें। इस पुस्तक में उन्होंने इसी का उल्लेख किया है।

राजेन्द्र प्रसाद, गाँधीजी की देन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2015

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राजनीतिक ही नहीं, एक साहित्यिक व्यक्ति भी थे। उन्होंने अपनी सोच, अपने अनुभवों एवं उदात्त विचारों को बहुत ही कुशलता से कागज पर उतारा है। गाँधीजी के दर्शन को उन्होंने जितनी गइराई से समझा था और बापू के सत्य अहिंसा एवं कर्मवाद के सिद्धांत को जितनी निष्ठा से अपने जीवन में उतारा उसी का उल्लेख उन्होंने इस पुस्तक के द्वारा किया है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, आत्मकथा, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 2013

प्रस्तुत पुस्तक, को लेखक ने 162 शीर्षकों में बाँटा है। इस पुस्तक में लेखक ने बड़ी से बड़ी घटना को इतने आसान ढंग से लिखा है कि पढ़कर आश्चर्य होता है। राष्ट्र की स्वतंत्रता का इतिहास, युग परिवर्तनकारी घटनाएँ, अपना बचपन, शिक्षा, जितने संकट उनके जीवन में आए, उनका सही–सही और सजीव वर्णन किया है।

अरविंद मोहन, मि0 एम0के0 गाँधी की चम्पारण डायरी, प्रभात प्रकाशन, 2017

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने गाँधीजी का चम्पारण पहुँचना एक युगांतरकारी घटना माना है। यह प्रयोग कई मायनों में विलक्षण था। गाँधी की स्वीकार्यता को बताने के साथ ही अन्याय सहने वाले जीवंत समाज में प्रतिरोध की

शक्ति के उभरने तथा खुद गाँधी द्वारा अपनी पूरी ईमानदारी, निष्ठा, दम व समझ के साथ स्थानीय लोगों तथा समस्याओं से एक रिश्ता जोड़ने एवं उन हजारों–लाखों लोगों द्वारा झट से गाँधी पर भरोसा करके उनको अपनाने की अद्‌भुत दास्तान भी है। इस पुस्तक में नील के किसानों के शोषण के विरुद्ध शुरु आंदोलन की कहानी का विवरण है।

पूर्णनाथ कुमार, राष्ट्रीय आंदोलन में वकीलों का योगदान, जानकी प्रकाशन, नई दिल्ली 2009

प्रस्तुत पुस्तक में राष्ट्रीय आंदोलन के परिपेक्ष्य में वकालों के योगदान को रेखांकित किया गया है। इस पुस्तक के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि राष्ट्रीय आंदोलन को गति प्रदान करने एवं भारत की समस्त जनता को राष्ट्रीयता की विचारधारा से जोड़ने के लिए वकीलो का यह वर्ग किस तरह से प्रतिबद्ध था। चूंकि डॉ. राजेन्द्र प्रसाद स्वयं एक वकील थे। अतः इस पुस्तक से उनके द्वारा चम्पारण आंदोलन में किए गए कार्यों को विस्तृत रुप से वर्णित किया गया है।

काली किंकर दत्त, आधुनिक भारत के निर्माताः डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रकाशन विभाग, 2011

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने बहुत से व्यक्तियों के वक्तव्य जो डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के साथ संबद्ध रहे उनका उल्लेख किया है। इस पुस्तक में उनके आंरभिक जीवन, चम्पारण में गाँधी के साथ सहयोग, बिहार भूकम्प, कांग्रेस अध्यक्ष, भारत के प्रथम राष्ट्रपति इत्यादि, उनके जीवन से संबंधित विभिन्न घटनाओं एवं पहलूओं पर प्रकाश डाला गया है।

तारा सिन्हा, युग पुरुषः डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रभात प्रकाशन, पटना, 2017

इस पुस्तक में लेखिका ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की संक्षिप्त जीवनी बिहार के एक छोटे से गाँव के मध्यमवर्ग परिवार से आए एक ऐसे व्यक्ति के संघर्षो एवं उपलब्धियों की मोहक कहानी प्रस्तुत की है। जिसकी असाधारण मेघा तीक्ष्ण बुद्धि, विलक्षण प्रतिभा, कड़े परिश्रम और निःस्वार्थ सेवा–कार्यों ने उसे देश के शीर्ष नेताओं की पंक्ति मे ला खड़ा किया। तथ्यों, तारीखों सहित राजेन्द्र प्रसाद के जीवन की घटनाओं का सम्पूर्ण समग्र ब्योरा संक्षेप रुप में प्रस्तुत करना इस पुस्तक की विशेषता है।

आशुतोष पार्थेश्वर, चम्पारण आंदोलन 1917, प्रभात प्रकाशन, 1 जनवरी 2017

इस पुस्तक में प्रताप, अभ्युदय, भारतमित्र, द बिहार हेराल्ड हितवाद, पायोनियर जैसे पत्रों में प्रकाशित चम्पारण संबंधित समाचार रिपोर्ट आदि संकलित है। चम्पारण की अंतर्कथा को प्रमाणिकता से समझने के लिए यह प्राथमिक स्त्रोत है। भारतीय इतिहास के इस महत्वपूर्ण अध्याय को पढ़ने–समझने के लिए चम्पारण आंदोलन 1917 एक संग्रहणीय पुस्तक है।

राजेन्द्र प्रसाद, बापू के कदमों में, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010

प्रस्तुत पुस्तक में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कहा है कि महात्मा गाँधी रुपी पावन गंगा में से जिसकी जितनी शक्ति और जितना पुण्य रहा, उसने उतना लिया। यदि मुझे कुछ पाने का बड़ा सौभाग्य नहीं हुआ तो यह मेरा दुर्भाग्य है। इस पुस्तक में अपनी समझ से जो कुछ उनका महत्व आया, उसे यहाँ दे देने का प्रयत्न किया है।

भैरव लाल दास, चम्पारण में गाँधीजी की सृजन यात्रा, बिहार विद्यापीठ, अगस्त 2018

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने यह उल्लेख किया है कि निलहे अंग्रेज चम्पारण में किसानों से जबरन नील की खेती ही नहीं करवाते थे बल्कि दर्जनों ऐसे टैक्स लेते थे जिससे उन्हें कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। इस पुस्तक में तत्कालीन बिहार की राजनीति में कायस्थों, मुसलमानों एवं वकीलो की भूमिका का भी उल्लेख किया गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में अभिलेखागारीय पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस शोध में अभिलेखीय स्त्रोत के रुप में राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली, राजकीय अभिलेखागार पटना, सदाकत आश्रम पटना एवं खुदाबख्श पुस्तकालय पटना के ग्रंथों एवं विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं का प्रयोग किया गया है।

उपजाऊ जमीन, हरे–भरे जंगल तथा पहाड़ी नदियों से परिपूर्ण, हिमालय की तराई में बसा बिहार का पश्चिमोत्तर सीमांत जिला चम्पारण पुरातन काल से ही ग्राम्य–जीवन तथा कृषि आधारित अर्थ–व्यवस्था का पोषक रहा है।[1] भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी का राज कायम होने के बाद भी इस क्षेत्र की सामाजिक–राजनीतिक अवस्था पूर्ववत ही रही पर इसका आर्थिक स्वरुप, जो परम्परागत कृषि व्यवस्था पर आधारित था, पूर्णतः बदल गया। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (1775–1783) के बाद यूरोपीय बाजारों में नील की बढ़ती मांग ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी का ध्यान नील के उत्पादन की ओर आकृष्ट किया। इस समय नील का व्यापार सर्वाधिक मुनाफा देने वाला व्यवसाय था। नील की अप्रत्याशित मांग को पूरा करने के लिए बंगाल एवं बिहार में नील की कई कोठियाँ स्थापित की गई थी।[2] ऐसे अंग्रेजों को निलहे कहा जाता था। ब्रिटिश शासक वर्ग और अंग्रेज यहाँ के किसानों को एक बीघा जमीन के तीन कट्ठे भाग में नील की खेती के लिए मजबूर करते थे। इस प्रथा को 'तीन कठिया प्रथा' कहा जाता था। इस प्रथा के कारण चम्पारण के किसानों का अत्यंत शोषण हो रहा था। किसानों में अंग्रेजों के खिलाफ व्यापक असंतोष फैल चुका था जिसके परिणामस्वरुप चम्पारण का सत्याग्रह गाँधीजी के नेतृत्व में हुआ। साथ ही इस सत्याग्रह के नेतृत्व में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अग्रगण्य स्थान रखते हैं।[3]

बिहार में नील उद्योग प्रारंभ करने का श्रेय 1782–85 में दरभंगा के कलेक्टर फोक्रॉस को जाता है।[4] इन्होंने यूरोपीयन ढंग से बिहार में नील उद्योग का प्रारंभ खुद अपने खर्च पर किया। भारत तथा बाहर के देशों में 18वीं शताब्दी में नील की माँग बहुत थी। 19वीं शताब्दी में ब्रिटेन में औद्योगिक क्राँति के परिणाम स्वरुप बहुत सारी वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि के साथ–साथ कपड़ों के उत्पादन में लगभग 10 से 12 गुना की वृद्धि हुई। इससे कपड़ों में उपयोग की जाने वाली नील की माँग भी बढ़ी। ब्रिटेन के अलावा भारतीय नील फ्रांस, अमेरिका, इटली, मिस्त्र, आस्ट्रेलिया तथा फारस आदि देशों में भेजी

जाती थी। नील की माँग तथा भारी मुनाफे को ध्यान में रखकर कम्पनी ने निलहे साहबों को जन्म दिया, जिन्होंने अपने शोषण एवं अत्याचार के लिए चम्पारण ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतीय इतिहास को कंलकित किया।[5]

चम्पारण में जब शुरुआती दौर में अंग्रेजों द्वारा नील की खेती की जाती थी, तब उनके पास अपनी भूमि नहीं होती थी, न ही किसी भी भूमि पर उनका अधिकार था। निलहे गोरे बेतिया के राजा को लालच देकर नील की खेती करवाते और जितना जमा वसूल होता, कबूल कर लेते थे। निलहे तथा कोठीवाले को इससे लाभ होता परंतु बेचारे रैयत इससे परेशान रहते थे। कुछ दिनों बाद रैयतों से शर्त के रुप में नील बोने का कार्य लिया जाने लगा और उसे सट्टे के रुप में लिखा जाने लगा। इस सट्टे की शर्त इस प्रकार होती थीः– किसान अपनी स्त्रोत के तीन कट्ठे भाग पर 20 से 30 वर्षों तक नील बोया करेगें। किस खेत पर नील बोया जाएगा, यह कोठी के कर्मचारी ही निश्चित करेंगे। खेत पर नील बोने का कार्य रैयत करेंगे, पर इसकी निगरानी कोठी रखेगी। फसल अच्छी हो या खराब किसी भी कीमत पर रैयत को कीमत कम मिलेगी। यदि रैयत शर्त के विरुद्ध नील की खेती नहीं करता तो उससे एक बड़ी रकम हर्जाने के रुप में वसूल की जाती थी।[6] महात्मा गाँधी के आगमन से पूर्व चम्पारण निलवरों की लगभग 70 कोठियाँ स्थापित हो चुकी थी।[7]

26 से 30 दिसम्बर 1916 तक लखनऊ में भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। कांग्रेस के इतिहास में यह पहला अवसर था जब दो हजार तीन सौ से अधिक प्रतिनिधि एक राष्ट्रीय मंच पर इकट्ठे हुए थे। बिहार से इस अधिवेशन में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, ब्रज किशोर प्रसाद, राजकुमार शुक्ल के अतिरिक्त अनेक लोग भाग लेने पहुँचे।[8] बिहार के प्रतिनिधियों के प्रयास से बिहार प्रांत संबंधी चम्पारण के नीलवरों और उनके रैयतों के संबंध में जाँच करने हेतु प्रस्ताव लाया गया। चूंकि उस समय देश के अग्रणी नेता बाल गंगाधर तिलक थे, तो राजकुमार शुक्ल ने चम्पारण की समस्या से उनको अवगत कराया। परंतु तिलक ने देश की राजनैतिक स्वतंत्रता के प्रश्न को प्रमुखता प्रदान कर इसे बाद में देखने की बात कही।[9] राजकुमार शुक्ल ने गाँधीजी की सौम्यता और सादगी से प्रभावित होकर निलहो के जुल्म से चम्पारण के रैयतों की बचाव के लिए गाँधीजी से गुजारिश की। किन्तु गाँधीजी ने कहा कि जब तब वह खुद अपनी आँखों से स्थिति की विषमता का अवलोकन नहीं कर लेते तब तक वे कुछ भी नहीं बोलेंगे। इन सब के बावजूद अधिवेशन में चम्पारण संबंधित प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गयी।[10]

महात्मा गाँधी ने कहा कि चम्पारण संबंधी प्रस्ताव स्वीकृत हो जाने पर राजकुमार शुक्ल को बड़ी खुशी हुई पर वह खुद उन्हें चम्पारण के किसानों का दुःख दिखाना चाहते थे।[11] महात्मा गाँधी से डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की प्रथम मुलाकात कलकत्ता अधिवेशन में हुई। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद अपनी आदत से मजबूर किसी से जबरदस्ती या आगे बढ़कर जान–पहचान करना नहीं चाहते थे। इसलिए इस अधिवेशन में गाँधीजी उनके बगल में होते हुए भी उनसे बात न कर सके। किंतु चम्पारण सत्याग्रह के दौरान उनकी दोबारा मुलाकात हुई। इस मुलाकाल के दौरान गाँधीजी की वेशभूषा और बातचीत का डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के मन पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा। किंतु जिस तरह से गाँधीजी ने चम्पारण में अंग्रेजों के लगभग सौ साल से नील की खेती करने और कराने का विरोध कर वहाँ के किसानों को उससे आजादी दिलायी, इससे राजेन्द्र प्रसाद प्रभावित हुए बिना न रह सके।[12]

राजकुमार शुक्ल ने 27 फरवरी 1917 को दुःखभरा पत्र पीर मोहम्मद मुनिस से लिखवाकर गाँधीजी को भेजा। इसका बहुत ही ज्यादा प्रभाव गाँधीजी पर पड़ा और वह चम्पारण जाने के लिए तैयार हो गये। महात्मा गाँधी चम्पारण में किसानों की स्थिति के अवलोकन के लिए राजकुमार शुक्ल के साथ पटना पहुँचे। पटना में राजेन्द्र प्रसाद के घर पर न होने से उनकी मुलाकात न हो सकी और वह सीधे मुजफ्फरपुर पहुँचें, और आचार्य कृपलानी के साथ उनके घर पर ठहरे। यहाँ से होते हुए गाँधीजी मोतिहारी पहुँचे।[13] मोतिहारी स्टेशन पर गाँधीजी के स्वागत के लिए चार–पाँच सौ लोगों की भीड़ इकट्ठा थी। वहाँ के कलेक्टर का हुक्म निकला कि गाँधीजी का मोतिहारी जिले में ठहरना जुर्म समझा जाएगा। वह 24 घंटे के भीतर पहली गाड़ी से बाहर जाएं। ऐसा अब तक किसी के भी जिले में आने पर रोक नहीं लगाई गई थी।[14]

गाँधीजी ने सरकार के इस हुक्म को मानने से इंकार कर दिया और उनपर मुकदमा चला। गाँधीजी ने अपने बयान में कहा कि मैं यहाँ दुःखी और पीड़ितों की शिकायतों की जाँच करके उनकी सेवा करने और दुःख दूर करने आया हूँ। सरकार अपने हुक्म में मुझे यहाँ से निकालकर यह काम करने से रोकना चाहती है, इसलिए सरकारी हुक्म तोड़ने का दोष मैं अपने माथे न लेकर सरकार के ही माथे देता हूँ।[15]

गाँधीजी को पता था उनके इस इंकार से उन पर मुकदमा चलाया जा सकता है। अतः उन्होंने इस बात की सूचना तार द्वारा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को पटना लिख भेजी। इसकी जानकारी मिलते ही डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, ब्रजकिशोर, अनुग्रह नारायण और शंभूशरण के साथ मोतिहारी पहुँचे। मोतिहारी पहुँचने पर गाँधीजी ने लोगों से पूछा कि ''मेरे जेल जाने पर आप लोग क्या करोगे?'' डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी आत्मकथा में लिखा था कि ''इन दिनों इस बात की संभावना किसी को भी न हो सकती थी। जेल शब्द एक बड़ी विभीषिका का पर्याय था। लोग जमानत पर छूटने के लिए हर्जाने के रुप में हजारों रुपया खर्च करते थे। यहाँ एक ऐसा व्यक्ति है, जो दूसरे लोगों की खातिर जेल जाने को तैयार है। तो हम कैसे घर वापस जा सकते हैं। यह जेल यात्रा बिहार के किसानों के लिए ही है। हमने भी निश्चय किया कि गाँधीजी के साथ जेल जाना ही श्रेयस्कर होगा।''[16]

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद चम्पारण के पूरे दौरे में महात्मा गाँधी के साथ ही रहे और गाँधीजी के कार्य–पद्धति, विचार और उनका पक्ष तथा विपक्ष पर पड़ने वाला जो प्रभाव उन्होंने देखा, उससे उनके प्रति प्रेम बढ़ा ही; उनकी कार्य पद्धति के दूरगामी परिणामों पर भी उन्हें

पक्का भरोसा हो गया। जैसा गाँधीजी को वचन दिया था, तदनुसार राजेन्द्र प्रसाद ने अपने साथियों सहित जाँच का कार्य जारी रखने के लिए आपस में मिल–बैठकर कपना कार्यक्रम बनाया, ताकि कुछ व्यक्तियों की टोलियां बारी–बारी काम करती रहे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद गाँव– गाँव जाकर स्वयं रैयतों से मिले और हजारों संख्या में बयानात लिखवाए।[17]

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 25 हजार किसानों के बयान दर्ज किए। यह जाँच प्रक्रिया इतनी व्यापक और प्रभावशाली थी कि निलहे साहब घबरा गए। उन्होंने जाँच को रुकवाने के अनेक प्रयास किए, परन्तु सब बेकार गए। जाँच पूरी होने के बाद डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और गाँधीजी ने इसे सरकार को सौंप दिया। सरकार अंग्रेजो की थी, गाँधीजी की रिपोर्ट पर अपने ही अधिकारियों के विरुद्ध वह कार्यवाही कैसे करती।[18] जाँच की एक रिपोर्ट मिलने के बाद बिहार के गर्वनर ने मिलने के लिए उन्हें राँची बुलाया। इसके परिणामस्वरुप रैयतों की शिकायतों की जाँच के लिए गर्वनर द्वारा एक कमीशन की नियुक्ति की गई और गाँधीजी भी इसके सदस्य बनाए गए।[19]

समिति ने सब की राय से एक रिपोर्ट तैयार की और उसे बिहार तथा उड़ीसा की सरकार को 4 अक्टूबर 1917 को सौंप दिया। इस रिपोर्ट के आधार पर मार्च 1918 में चम्पारण 'एग्रेरियन एक्ट' बना। इस एक्ट के अनुसार तीन कठिया प्रथा की समाप्ति हुई, नील उपजाने के लिए बंदोबस्ती–सशर्त तथा नियमान्तर्गत की गयी। मालगुजारी की दर में 20 से लेकर 26 प्रतिशत की कमी की गई। बेतिया कोर्ट ऑफ वार्ड्स पर 6 वर्षों तक जमाबंदी की वृद्धि पर रोक लगा दी गई, यदि बेतिया राज निलवरों से नकद वसूल करके रैयतों को तावान के रुपये लौटायेगी। रैयतों के वारिस के नाम का पंजीकरण निःशुल्क किया गया। जमींदारों, ठेकेदारों द्वारा रैयतों पर जुर्माना करना तथा उसकी वसूली करना गैरकानूनी घोषित किया गया। मालगुजारी की प्रत्येक किश्त के भुगतान पर रसीद देने का विचार किया गया। चम्पारण आंदोलन के परिणामस्वरुप जितने सुधार हुए, वे रैयतों के लिए सुखदायक तथा उत्साहवर्धक थे। निलहे के आर्थिक लाभ का मूलाधार रैयत और खेतिहर मजदूरों का शोषण, जाँच कमेटी की रिपोर्ट के बाद पूर्णतः समाप्त हो गया।[20]

महात्मा गाँधी चम्पारण सत्याग्रह के समय वहाँ के लोगों एवं वकीलों की निष्ठा एवं ईमानदारी से इतना प्रभावित हुए थे कि उन्होंने उनकी प्रशंसा में जनकधारी प्रसाद को संबोधित करते हुए लिखा था कि ऐसे निष्ठावान कार्यकर्ताओं की टोली मुझे न तो पहले कभी मिली थी और नही आगे मिलेगी। यदि ऐसे समर्पित कार्यकताओं की टोलियाँ पूरे देश में उपलब्ध हो जाये तो स्वराज्य प्राप्त करना कितना आसान हो जाएगा। गाँधीजी अपने दो प्रमुख सहयोगियों डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं ब्रजकिशोर बाबू के योग्यता के कायल थे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने चम्पारण आंदोलन के दौरान गाँधीजी के हर एक निर्णय का साथ दिया था और मिलकर कार्य किया था। उसी समय से गाँधीजी के हृदय में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को लेकर लगाव उत्पन्न हुआ और दोनों के बीच आदर और प्रेम की एक गाँठ बंध गई थी। गाँधीजी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद की सरलता और नम्रता से बहुत प्रभावित हुए थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के संबंध में कहा कि उनकी लगन और प्रेम ने मुझे ऐसा अपंग बना दिया कि मैं उनके बिना एक कदम आगे नहीं रख सकता था।[21]

निष्कर्ष

चम्पारण की विजय से पिछडे हुए बिहार में एक नई जागृति आ गई। प्रायः दस महीनों तक गाँधीजी के साथ काम करने के बाद उनके सहयोगी चम्पारण से नए विचार, नई स्फूर्ति और नए कार्यक्रम लेकर अपने स्थानों को वापस लौटे। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को गाँधीजी से कई बातों की सीख मिली। सत्य अहिंसा की महिमा उन्होंने समझी तथा जाना कि बड़े–से–बड़े काम को छोटे पैमाने पर शुरु कर किस प्रकार सफलता प्राप्त की जा सकती है। वस्तुतः गाँधीजी की कार्य–प्रणाली, शक्ति और नेतृत्व पर राजेन्द्र प्रसाद को इतना विश्वास हो गया कि चम्पारण सत्याग्रह समाप्त होते–होते वे गाँधीजी के अनन्य भक्त बन बैठे। लोक एवं देश सेवा की उनकी प्रवृत्तियों को जैसे एक निश्चित दिशा मिल गई।

अंत टिप्पणी

1. *वाल्मीकि चौधरी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सचित्र जीवनी, प्रकाशन विभाग 1983 पृ. 64*
2. *बंगाल डिस्ट्रक्ट गजेटियर, चम्पारण पृष्ठ संख्या 110, 6.63–फाईल नं–95970*
3. *पटना कमिश्नर्स नोट ऑन द सिस्टम ऑफ इण्डिगो कल्टिवेशन इन बिहार, जनरल एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट ऑफ पटना डिवीजन फॉर 1872–73*
4. *सुजाता, चम्पारण का सत्याग्रह, सर्वसेवा संघ, वाराणसी, 2018, पृ. 15*
5. *राजेन्द्र प्रसाद, चम्पारण में महात्मा गाँधी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना 1998, पृ. 24*
6. *जयंत दिवाण, चम्पारण सत्याग्रह की कहानी, सर्वासेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी 2017 पृ.36*
7. *अजीत प्रताप सिंह, चम्पारण सत्याग्रह का गणेश, लोकभारती प्रकाशन, 2010, पृ. 18*
8. *ब्रज किशोर सिंह , नील संघर्ष और गाँधी, प्राच्य प्रकाशन, दिल्ली, 2009 पृ. 48*
9. *लाल बहादुर सिंह चौहान, देशरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, स्वास्तिक प्रकाशन, दिल्ली, 2004 पृ. 40*
10. *महात्मा गाँधी, सत्य के प्रयोग (आत्मकथा), नवजीवन प्रकाशन, 2012 पृ. 162*
11. *राजेन्द प्रसाद, गाँधीजी की देन, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, 2015 पृ. 131*
12. *राजेन्द प्रसाद्र, आत्मकथा, सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली 2013, पृ. 300*
13. *पत्र राजकुमार शुक्ल का महात्मा गाँधी को 27 फरवरी 1917*
14. *अरविंद मोहन, मि. एम.के. गाँधी की चम्पारण डायरी, प्रभात प्रकाशन, 2017 पृ. 153*
15. *पूर्णनाथ कुमार, राष्ट्रीय आंदोलन में वकीलों का योगदान, जानकी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009 पृ. 115*
16. *काली किंकर दत्त, आधुनिक भारत के निर्माताः डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रकाशन विभाग, 2011 पृ. 71*

17. *तारा सिन्हा, युग पुरुषः डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रभात प्रकाशन, पटना, 2017 पृ. 38*
18. *आशुतोष पार्थेश्वर, चम्पारण आंदोलन 1917, प्रभात प्रकाशन, 1 जनवरी 2017 पृ. 159*
19. *राजेन्द्र प्रसाद, बापू के कदमों में, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010 पृ. 45*
20. *रिपोर्ट ऑफ द कमेटी ऑन द एग्रेरियन कण्डीशन इन चम्पारण वोल्यूम I एण्ड II पृ. संख्या 37 एवं 64–65*
21. *भैरव लाल दास, चम्पारण में गाँधीजी का सृजन यात्रा, बिहार विद्यापीठ, अगस्त 2018, पृ. 120*

चम्पारण सत्याग्रह के दौरान किसानों को सम्बोधित करते हुए महात्मा गांधी एवं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद